Baluchistan (Pre-Harappan Culture)

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-XI, Sem. – III

भारत - पाक के उतर पश्चिमी क्षेत्र के नवपाषाणिक संस्कृति का प्रारम्भ एवं विकास 6000 - 4000 ई. पू. के काल में हुआ था। इस नवपाषाणिक संस्कृति और हड़प्पा संस्कृति के बीच कई ताम्रपाषाणिक संस्कृतियाँ बलूचिस्तान तथा बृहतर सिन्धु घाटी के क्षेत्र में सिन्धु एवं पंजाब में पनपी एवं विकसीत हुई। इन दोनों क्षेत्रों की संस्कृतियाँ एक ओर इस महाद्वीप में गेहूँ, जौ पर आधारित कृषि, पशुपालन, ताम्र प्रयोग, चाक निर्मित मृदभांड तथा स्थायी बस्तियों का प्रतिनिधित्व करती है तो दूसरी ओर वे सिन्धु घाटी की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करती है। इन दोनों क्षेत्रों की संस्कृतियों को बलूचिस्तान संस्कृति या बृहतर सिन्धु घाटी की प्राक- सैन्धव संस्कृति या हड़प्पा पूर्व संस्कृति कहा जाता है। बलूचिस्तान ताम्र पाषाणिक संस्कृति का अलग से विचार करना इसलिए भी आवश्यक है कि वें प्राक - हड़प्पा संस्कृति की पृष्ठभूमि को अत्यधिक रूप से स्पष्ट करती है। बलूचिस्तान क्षेत्र मुख्यतः पठारी क्षेत्र है इस क्षेत्र के निवासी आज भी पशुपालन तथा सीमित कृषि के आधार पर ही जीवन निर्वाह करते है। भीषण शीतकाल में ये लोग सिन्धु नदी के मैदानी इलाके में आकर जीवन - निर्वाह करते है और बसंत ऋतु के आगमन के समय पुनः अपने पठारी इलाके में लौट जाते है। इस प्रकार की स्थिति संभवतः ऐतिहासिक काल मे रही होगी। इस आधार पर बलूचिस्तान ग्राम्य संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति के सम्बंधो की ब्याख्या की जा सकती है।

बलूचिस्तान में बहुत सारे ताम्र पाषाणिक स्थल प्रकाश में आये है जो इस बात के द्वयोतक है कि प्राचीन काल में आज की अपेक्षा जलवायु अधिक अच्छी होगी। प्रारंभ में बलूचिस्तान क्षेत्र में ताम्र पाषाणिक संस्कृतियों के वर्गीकरण का मुख्य आधार उनके भांड के

आकार - प्रकार चित्रण शैली एवं अभिप्राय थे । इस सन्दर्भ में यह उल्लेख करना जरुरी होगा कि Stuart Pigatt ने इस क्षेत्र की संस्कृति को भांडों के आधार पर दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया यथा - पांडूरंग के मृदभांड वाले दक्षिणी क्षेत्र एवं लाल रंग के मृदभांड वाले उतरी क्षेत्र की संस्कृति ।

पांडूरंग के संस्कृति का उपविभाजन तीन स्थानीय संस्कृतियों में किया गया यथा - क्वेटा संस्कृति, कुल्ली संस्कृति तथा आमरीनाल संस्कृति । लाल रंग की मृदभांड वाली संस्कृति को झोब संस्कृति नाम दिया गया । लेकिन इधर बलूचिस्तान क्षेत्र के अन्वेषण से पुराविद्गण इस निष्कर्ष पर पहुचे की Stuart Pigatt द्वारा प्रस्तावित विभाजन उपयुक्त नहीं है क्योंकि पांडूरंग के मृदभांड बलूचिस्तान के दक्षिण - पश्चिम तक ही सीमित नहीं बल्कि सिन्ध प्रदेश तक मिलते है । लाल रंग के मृदभांड भी बलूचिस्तान के मध्यवर्ती क्षेत्र में स्थित कलात नामक स्थल से भी मिले है । इसके आलावे कुछ स्थलों पर पांडू एवं लाल दोनों रंगों के मृदभांड पर एक ही तरह के अलंकरण अभिप्राय मिलते है । अतः मृदभांडो के आकार - प्रकार एवं चित्रण अभिप्रायों के आधार पर विभिन्न स्थानीय एवं क्षेत्रीय संस्कृतियों के रूप में विभाजन संभव नहीं है लेकिन इस क्षेत्र के नदियों एवं पहाड़ियों क्व संस्कृतियों के निर्माता के पारस्परिक सम्पर्क में निश्चित ही व्यवधान उपस्थित किये इसलिए इस क्षेत्र की ग्राम्य संस्कृतियों के अवशेषों में पर्याप्त विविधता एवं स्थानीयता दृष्टिगोचर होती है । इस सन्दर्भ में बलूचिस्तान क्षेत्र की चार संस्कृतियों यथा - क्वेटा संस्कृति, कुल्ली संस्कृति, आमरीनाल संस्कृति तथा झोब संस्कृति विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

(i) **क्वेटा संस्कृति -** क्वेटा संस्कृति की मुख्य विशेषता पांडुरंग या Buff colour के मृदभांड है जिसपर काले रंग से चित्रण किया गया है । इस संस्कृति के प्रमुख स्थल है क्वेटा, किलेगुलमुहमम्द, दमसदात, पीराकदम आदि । इन स्थलों से प्राप्त मृदभांड मंदगति के चाक पर निर्मित है । मृदभांडो पर चित्रित अभिप्रायों में ज्यामितिक अलंकरण मुख्य रूप से मिले है । आड़े तिरछे आदि पशु पक्षियों का चित्रण दुर्लभ है। मृदभांडो के मुख्य आकारों में कटोरे, छिछली थालियाँ, जामदानी आदि का उल्लेख किया जाता है । इस संस्कृति के अन्य उल्लेखनीय पुरावशेष

है चर्ट पत्थर के बने ब्लेड, सेलखड़ी पत्थर के बने प्याले, हड्डी के बने point एवं मातृदेवी की मूर्तियाँ।

(ii) **कुल्ली संस्कृति -** दक्षिणी बलूचिस्तान के पांडुरंग के मृदभांड की संस्कृति कुल्ली संस्कृति है । इसका नामकरण बलूचिस्तान के कोलावा जिले में स्थित कुली पुरास्थल के नाम पर किया गया है । इस संस्कृति के प्रमुख स्थल कुली एवं मेही है। कुली संस्कृति के मृदभांडो को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया है यथा कुली मृदभांड इस संस्कृति के अधिकांश मृदभांडो के बाहरी सतह पर उपरी हिस्से में बृक्षों से घिरे एक कूबड़ वाले बैल का चित्रण मिलता है । बैल की आँखों को एक वृत के माध्यम से बनाया गया है और उसके पैड़ों के बीच हिरण और जंगली बकरों की आकृतियाँ एक क़तार में मिलती है । अलंकरण अभिप्रायों में मुख्य है - पुष्पगुच्छ, तिकोण लटकन आदि । मृदभांड आकारों में मुख्य है बोतलनुमा पात्र, छिछली थालियाँ, स-आधार तस्तरी, छिद्रित पात्र, मटके, जामदानी । इसमें स-आधार तस्तरी तथा बेलनाकार छिद्रित पात्र सिन्धु सभ्यता के प्रभाव के द्योतक है । उपकरणों के अन्य पुरानिधियों में चर्ट पत्थर के बने blade, सील - लोढे, मिट्टी की चूड़ियाँ, मेही की एक कब्र से प्राप्त सिर रहित स्त्री की आकृति है जिसे धड़ के नीचे चिपटा बनाया गया हैतथा उसके हाथ केहुनी से मुड़े है। आड़ी - तिरछी रेखाओं से अलंकृत कूबड़वाले बैल भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है । कुली संस्कृति से सम्बद्ध लोग अपने मकानों का निर्माण अन्य रफ पत्थरों से करते है । दीवारों पर सफ़ेद प्लास्टर लगाने का प्रमाण मिला है । कमरों की रूप रेखा एवं सीढियों के साक्ष्य से दोमंजिले मकान का संकेत मिलता है । मेही में मिट्टी या कच्ची इंटों का प्रयोग मकान के निर्माण में किया गया है । कुली स्थान पर दाह संस्कार के साक्ष्य मिले है यथा मेही में दफनाने का प्रचलन था मेही में प्राप्त अस्थि कलशों के साथ तांबे के दर्पण, तांबे के दो पिन, मृदभांड तथा मृण्मूर्तियां मिली है।

आमरी नाल संस्कृति - पांडुरंग के मृदभांडो की तीसरी संस्कृति आमरी नाल के नाम से प्रसिद्ध है । इस संस्कृति का प्रसार दक्षिण बलूचिस्तान से सिन्ध तक मिलता है। इस पुरास्थल पर विस्तृत पैमाने पर उत्खनन किया गया जिसके परिणामस्वरुप पांच कालों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई

। इनमें से प्रथम चार काल आद्य ऐतिहासिक काल से सम्बंधित है । प्रथम काल को चार उपकालों में विभाजित किया गया है । प्रथम उपकाल के अधिकांश मृदभांड हस्तनिर्मित है। प्रथम उपकाल के अधिकांश मृदभांड हस्तनिर्मित है। चाक निर्मित मृदभांडो के किनारे पतले आकार के है । काले रंग से ज्यायमितीय अलंकरण अभिप्राय संजोये गए है अन्य पुरावशेषों में फलक, गोलियां, मिट्टी के मनके एवं तांबे के एक टुकड़े का उल्लेख किया जा सकता है । ज्ययामितीय रूप से चित्रित बर्तनों के आलावा चर्ट पत्थर के बने मनके, चूड़ियाँ तथा सीप की चूड़ियाँ पायी गई है । द्वितीय उपकाल में कच्ची ईंटों से निर्मित मकानों के अवशेष पाए गये है । इस काल में चाक - निर्मित मृदभांडो की संख्या में बृद्धि परिलक्षित होती है। इस आधार पर तश्तरी का व्यवहार आरंभ कर दिया गया था । नवीन अलंकरण अभिप्रायों में सिगमा, चेक, लटकन, हीरक तथा हिरण के सींग आदि की गणना की जा सकती है । चार्ट पत्थर के blade तथा कई अन्य उपकरणों का व्यवहार होने लगा था । तृतीय उपकाल आमरी के विकास का चरमोत्कर्ष काल है। इस काल में दो प्रकार के आवास मिले । प्रथम प्रकार के आयताकार मकान के फर्श मिट्टी के बने हुए थे तथा इसमें दरवाजे की व्यवस्था थी। दुसरे प्रकार का भवन छोटे - छोटे सेलनुमा कमरों में विभाजित था । इसका व्यवहार प्रमुखतः सामग्री रखने में होता था । मृदभांडो पर द्विरंगी तथा तिरंगी चित्रण मिलते है । चतुर्थ उपकाल में भवन वृहत आकार के थे। इस उपकाल में बर्तनों का चित्रण लाल रंग से किया जाता था । चित्रण में सांड की आकृति विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इस काल में चित्रित अभिप्रायों में बैल एवं मत्स्य - शल्क अन्तर्भेदी वृत सिन्ध प्रदेश के आमरी और कोटदीजी दोनों जगह विशिष्ट चित्रित मृदभांड शैलियों के दर्शन होते है, जो सिन्ध तथा इससे लगे हुए क्षेत्रों में अनेक स्थलों पर पाए गए है।

पश्चिमी बलूचिस्तान के कलात जिले में स्थित नाल नामक पुरास्थल के उत्खनन से इस पुरास्थल के विषय में ज्ञात हुआ। उत्खनन से ज्ञात हुआ कि नाल में विस्तीर्ण शवाधान (पूर्ण शवाधान) तथा आंशिक शवाधान का प्रचालन । नाल के शवाधानों में अंत्येष्टि सामग्री रखी गई थी जिसमें मृदभांडो के अतिरिक्त तांबे की वस्तुओं में कुल्हाड़ी, छेनी, छुरा, बसूला तथा आरी

उल्लेखनीय है । नाल के मृदभांड पांडू या गुलाबी रंग के है जिन पर दुधिया रंग की पट्टी(slip) मिलती है । बहुरंगी डिजाईनें काले, लाल, दुधिया, नीले और पीले रंगों से बनाई गई है । इनमें से केवल लाल रंग पकाने के पूर्व और शेष रंग पकाने के बाद लगाया गया था । प्रमुख ज्यामितीय डिजाईनों में सिग्मा, कंघी के प्रतिरूप, हीरक, प्रतिच्छेदी - वृत और जीव - जन्तुओं तथा पशुओं में मछली, बिच्छू, सांड, चीते एवं हिरण मिलते है । प्रमुख पात्र - प्रकारों में अंतगर्त किनारे वाले कटोरे, चित्रित बेलनाकार पेटिका और पेंदीदार पात्र मुक्य रूप से उल्लेखनीय है ।

आमरी नाल संस्कृति के मृदभांडो के कतिपय चित्रण अभिप्राय तथा आकार प्रकार ऐसे है जो केवल आमरी से मिले है लेकिन नाल में जिनका अभाव मिलता है । आमरी के मृदभांडो में उदाहरण के लिए चित्रण में लाल एवं काले रंग का प्रयोग मिलता है । नाल में इन दोनों रंगों के अतिरिक्त पीले, नीले एवं हरे रंगों का उपयोग मिलता है । आमरी के मृदभांडो पर जिव जन्तुओं और पशुओं का अंकन दुर्लभ है जबकि नाल के पात्रों पर मछली, बिच्छू, सांड, चीते एवं हिरण का चित्रण मिलता है । नाल में मकानों के निर्माण के लिए पत्थरों की दीवालें बनाई जाती थी । आमरी तथा नाल से पशु एवं नारी मृण्मूर्तियां नहीं प्राप्त हुई है।

(iii) **झोब संस्कृति -** उतरी बलूचिस्तान की झोब संस्कृति लाल रंग की मृदभांड परम्परा पर आधारित है और इन पात्रों पर अलंकरण काले रंग से किये गये है । झोब संस्कृति के पुरस्थलों में मुख्य है - राणाघुंडई, मुग़लघुंडई, पेरियानाघुंडई, डाबरकोट, कैदान आदि । इस क्षेत्र में दक्षिणी बलूचिस्तान की अपेक्षा पुरास्थलों की संख्या कम है। झोब संस्कृति की प्रमुख या संक्षिप्त रुपरेखा राणाघुंडई के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर की जा सकती है । यहाँ से प्राप्त पुरावशेषों को पांच कालों में बाँटा गया है । जिसमें प्रथम से तृतीय तथा चतुर्थ एवं पंचम काल सिन्धु सभ्यता के बाद के काल के है । प्रथम काल के पुरावशेषों में मुख्य है हस्तनिर्मित मृदभांड, फ्लिन्ट पत्थर के बने लघु पाषाण उपकरण, हड्डी की सुई, नोकदार सुई, मवेशियां, भेड़ एवं गधे की हड्डियाँ आदि । इस काल में मकानों के साक्ष्य नहीं मिले है । द्वितीय काल में चाक पर बने लाल रंग के मृदभांड जिसपर कोण वाले बैल तथा हिरण के चित्र मिले है। मिट्टी के पात्रों में

प्रमुख आकार है पेंदीदार या बिना पेंदीवाले कटोरे। इस पुरास्थल के पात्र आकार ईरान के हिस्सार स्थल से प्राप्त पात्रों के समान है जिसे ई. पू. 4000 का माना गया है। इस काल के मकानों के निर्माण हेतु नीव में पत्थर का प्रयोग किया गया था।

द्वितीय काल के पश्चात् यह पुरास्थल वीरान हो गया परन्तु इस स्थल का तृतीय काल दीर्घकालीन था तथा इसमें मकान के निर्माण के तीन चरण मिले है। इस काल के पात्रों के लाल सतह पर लाल रंग के चित्रण का प्रारम्भ हुआ। पात्रों में किये गए अलंकरण में अनेक रेखाओं से बने वर्गों में द्विरंगी विधि का भी उप्तोग किया गया है। सुरजंगल के आवास की तुलना राणाघुंडई के तृतीय काल से की गई है। राणाघुंडई से नारी एवं पशु मृण्मूर्तियाँ नहीं मिली। यद्धपि सुरजंगल, मुग़लघुंडई, पेरियानोघुंडई, डाबरकोट तथा कैदान से मृण्मूर्तियाँ मिली है। इन मृण्मूर्तियों के केश - विन्यास है, गले में अनेक कंठहार आँखों के लिए गोल छिद्र का उपयोग हुआ है। यद्धपि धड़ के नीचे नहीं बनाया गया है। पशु मृण्मूर्तियों में साढ़ का उल्लेख किया जा सकता है। नारी मृण्मूर्तियां तथा मुग़लघुंडई से प्राप्त पत्थर के बने लिंग एवं योनि तथापेरियानोघुंडई से प्राप्त पत्थर का बना लिंग एवं योनि धार्मिक महत्त्व का प्रतीत होता है। इस संस्कृति के अन्य पुरावशेषों में फ्लिन्ट के लघु पाषाण उपकरण, वानाग्र, सेलखड़ी पत्थर के बने प्याले, जानवर की हड्डी के बने सुई, चूड़ियों का उल्लेख किया जा सकता है। तांबे धातु की बस्तुएं अल्प संख्या में मिली है। इसमें पेरियानोघुंडई से प्राप्त hair pin तथा डाबरकोटसे प्राप्त तांबे का टुटा प्याला तथा सोने का pin उल्लेखनीय है। झोब संस्कृति के कुछ स्थलों से दाह - संस्कार के साक्ष्य मिले है। इस सन्दर्भ में सुरजंगल, मुग़लघुंडई, पेरियानोघुंडई से ज्ञात संगोरा शवाधानों का उल्लेख किया जा सकता है। अतः मृतकों को जलाने के बाद उसकी बची हड्डियों को मिट्टी के बर्तन में भरकर दफनाने के प्रचलन के बारे में जानकारी मिलती है।